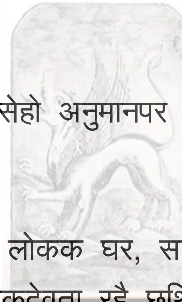
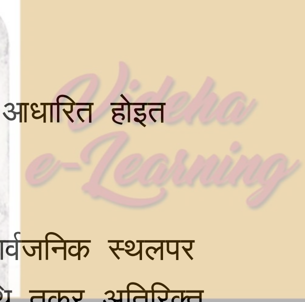
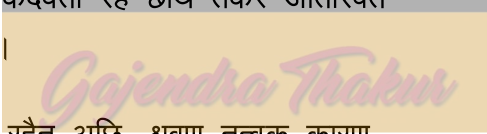
लोकगाथा/ नृत्य/ संगीत आदिक ऐतिहासिक वर्णन

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगे वाम पएर कने मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबै छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइ छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइ छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करै छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित हेबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइ छला, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल।

लोकगाथाक तत्व: भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ





गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित होइत अछि।

गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से जै जातिक लोकदेवता रहै छथि तकर अतिरिक्त दोसरो जातिक श्रोता रहैत छथि।

सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध रहैत अछि, श्रवण तत्वक कारण कथाक अनायास अलंकरण भेटैत अछि, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्द, नाट्य-संधि आ वस्तु निर्देशक अभाव रहैत अछि। वस्तु संगठन सुगठित नै रहैत अछि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन रहैत अछि।

ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा आ जातीय अस्मिताक प्रयोग होइत अछि। कथा-गायक आशु कवि होइ छथि- एकटा ढ़ाँचापर अपन हिसाबसँ ओ हेर-फेर कऽ गबै छथि प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि।

घण्टासँ ऊपर गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि। लोरिक मनुआर श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि मुदा सल्हेसक कथा आराध्य देवक समक्ष।

दैवी शक्ति द्वारा युद्धमे नायकक सहायता होइत अछि।

नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जेना महाभारतक जुआ आदि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

निष्कर्ष: सभ साहित्यिक विधा दू प्रकारक होइत अछि। लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐमे पात्रक, से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि, नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि। कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइत अछि।

वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)